अध्याय

07

गज़ल (साये में धूप)

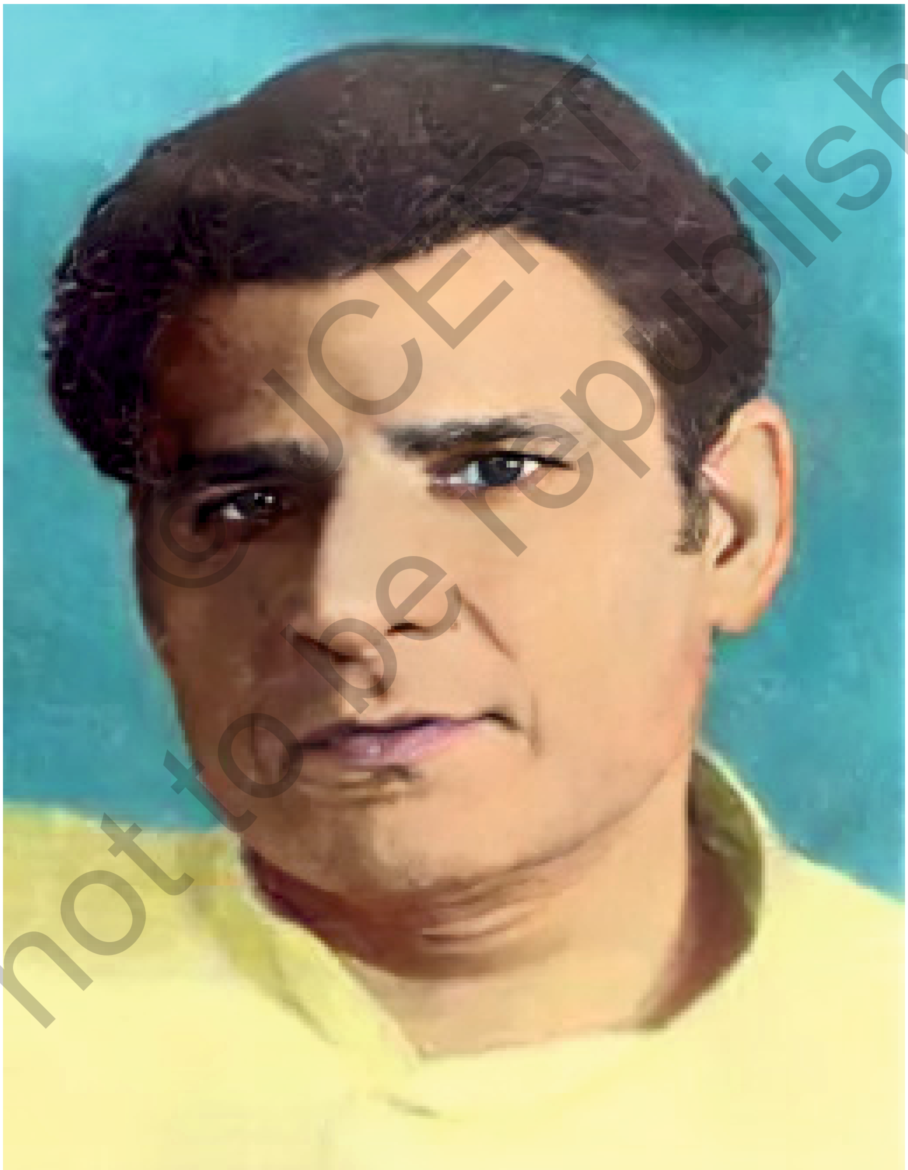

© JCERT not to be republished

दुष्यंत कुमार

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

कवि परिचय

पूरा नाम- दुष्यंत कुमार त्यागी।

जन्म - 1 सितम्बर 1933 ई.।

जन्म स्थान - राजपुर नवादा गांव, (उत्तर प्रदेश) ।

पिता का नाम - श्री भगवतसहाय।

माता का नाम - श्रीमती राजे किशोरी।

शिक्षा - नहटौर, चंदौसी, इलाहाबाद विश्व विद्यालय (हिंदी में एम .ए .) ।

पत्नी का नाम - राजेश्वरी कौशिक।

मृत्यु - 30 दिसम्बर 1975

प्रसिद्धि - ग़जज

कार्य क्षेत्रः- 1958में आकाशवाणी दिल्ली में पटकथा लेखन के रूप में कार्य,1960 में सहायक निर्देशक के पद पर, आकाशवाणी भोपाल, आकाशवाणी मध्य प्रदेश, संस्कृत विभाग के अंतर्गत भाषा विभाग में।

साहित्यिक परिचय

प्रारंभ कविता लेखन - परदेशी नाम से

साहित्यिक जीवन -इलाहाबाद

साहित्यिक संस्था - परिमल

पत्र- पत्रिका - पुकार, नए पत्ते

प्रमुख रचनाएं:

काव्य संग्रहः-

सूर्य का स्वागत 1957

आवाजों के घेरे 1962-63

जलते हुए वन का वसंत 1973

ग़ज़ल संग्रहः -

साये में धूप 1975

गीति-नाट्यः- एक कंठ विषपायी 1963

नाटकः-

मसीहा मर गया

उपन्यास :-

छोटे-छोटे सवाल, आँगन में एक वृक्ष, दुहरी जिंदगी

लघुकथाएंः-

मन के कोण (लघुकथाएँ)

पाठ का मुख्य बिन्दुः

- ग़ज़ल उर्दू काव्य की प्रमुख विधा है।
- ग़ज़ल (स्त्रीलिंग) ऐसी रचना जिसमें नायिका के सौंदर्य एवं उसके प्रति उत्पन्न प्रेम का वर्णन हो।
- ग़ज़ल नपे तुले शब्दों को हृदय की तीव्र अनुभूति को पाठकों अथवा श्रोताओं तक संप्रेषित करना।
- गजल के जनक आमिर खुसरो को भारत में माना जाता है।
- हिंदी गजल हिंदी साहित्य की नई विधा है।

© JCERT not to be republished

- एक ऐसी विधा है जिसमें सभी से शेर अपने आप में मुकम्मिल और स्वतंत्र होते हैं।
- इसी क्रम व्यवस्था के तहत पढ़े जाने की दरकार नहीं रहती।
- इसके बावजूद दो चीजें ऐसी है, जो इन शेरों को आपस में गुंथकर एक रचना की शक्ल देती है।
- एक, रूप के स्तर पर तुक का निर्वाह और दो, अंतर्वस्तु के स्तर पर मिजाज का निर्वाह।
- जैसा कि यहां देखेंगे पहले ग़ज़ल की दोनों पंक्तियों का तुक मिलता है और उसके बाद सभी शेरों की दूसरी पंक्ति में उसका निर्वाह होता है।
- आमतौर पर गजल के शेरों में केंद्रीय भाव का होना जरूरी नहीं है लेकिन यहां दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल (साए में धूप संग्रह) एक खास स्थिति में लिखी गई है।
- राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है उसे तलाशने का प्रयास किया गया है।
- हिंदी ग़ज़ल का जन्मदाता दुष्यंत कुमार को माना जाता है।
- इस गजल का केंद्रीय भाव है–राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खरिज करना और नए विकल्प की तलाश करना।
- कवि आम व्यक्ति के विषय में बताता है कि ये लोग गरीबी व शोषित जीवन को जीने पर मजबूर हैं।
- दुष्यंत की ग़ज़ल का मिजाज बदलाव के पक्ष में है। वह भी राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था में बदलाव चाहता है।

ग़ज़ल के विषय में हम सभी जानते हैं कि ग़ज़ल का कोई शीर्षक नहीं होता है। यहां पर भी कोई शीर्षक नहीं मौजूद है।

'साये में धूप' गजल संग्रह से ली गई ग़ज़ल का यह एक अंश है।

कवि राजनीतिज्ञों के झूठे वादों पर व्यंग करता है कि वे हर घर में चिराग उपलब्ध कराने का वादा करते हैं, परंतु यहां तो पूरे शहर में भी एक चिराग नहीं है।

कवि को पेड़ों के साए में धूप लगती है अर्थात् आश्रय दाताओं के यहां भी कष्ट मिलते हैं अतः वह हमेशा के लिए इन्हें छोड़ कर जाना ठीक समझता है।

वह उन लोगों के जिंदगी के सफर आसान बताता है जो परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को बदल लेते हैं मनुष्य को खुदा ना मिले तो कोई बात नहीं, उसे अपना सपना नहीं छोड़ना चाहिए। थोड़े समय के लिए सही, हसीन सपना तो देखने को मिलता है।

कुछ लोग का विश्वास है कि पत्थर पिघल नहीं सकते। कवि आवाज के असर को देखने के लिए बेचैन हैं। शासक शायर की आवाज को दबाने की कोशिश करता है, क्योंकि वह उसकी सत्ता को चुनौती देता है। कवि किसी दूसरे के आश्रम में रहने का स्थान पर अपने घर में जीना चाहता है।

- ग़ज़ल में बताए गए हर एक बात का बहुत ज्यादा महत्व होता है वह हर एक शब्द का

© JCERT not to be republished

अपना एक अर्थ होता है। यहां पर कवि ने राजनीति करने वाले लोगों पर व्यंग किया है कि किस तरीके से झूठे वादों के माध्यम से लोगों को बेवकूफ बनाते हैं एवं वोट मांगने चले आते हैं और वोट ले लेने के बाद वह अपना संपर्क लोगों से भूल जाते हैं। उनको एक तुच्छ व्यक्ति समझ जाते जबकि लोगों के कारण ही वह जीते हैं एवं उनका मान सम्मान होता है इस गंदी राजनीति पर कवि ने तिरछा व्यंग किया है।

- कवि के अनुसार हमेशा स्वाधीन तरीके से रहना चाहिए स्वाधीन जीवन जीना चाहिए कभी भी किसी के भरोसे जिंदगी को नहीं जीना चाहिए इससे हम उस जिंदगी के आदी हो जाते हैं।
- जब हमें सच का पता चलता है तो हम आधे जमीन पर और आधे पानी में खड़े रहते हैं अर्थात् कवि कहते हैं कि जिंदगी में सब को एक अच्छा जीवन यापन करने के लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता है जितना हो सके दूसरों पर निर्भर कम होना चाहिए। यही संदेश कवि ने यहां देना चाहा है।

गज़ल–

कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,

कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

शब्दार्थ–

तय = निश्चित

चिराग = दीपक,रोशनी,खुशहाली

हरेक = प्रत्येक

मयस्सर = उपलब्ध

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 1गजल संग्रह 'साये में धूप' से लिया गया है। इसके रचयिता हिंदी गजल सम्राट दुष्यंत कुमार है।इस गज़ल में समाज एवं राजनीति जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करना और नए विकल्प की तलाश करना।

व्याख्या:– इस कविता के माध्यम से कवि ने समाज एवं राजनीति में चलने वाली हलचल को खत्म कर एक नई सुबह के बारे में, एक नए तरीके के बारे में बताने की कोशिश की है। कवि देश के महान नेताओं पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि चुनाव से पहले इन महान नेताओं ने वादा किया था कि वे समाज के प्रत्येक लोगों को चिराग उपलब्ध करवाएंगे।

अर्थात् कुछ मूलभूत सुख- सुविधा उपलब्ध करवाएंगे, मगर यह सोचने की बात है कि यह कैसे हो सकता है, जबकि इस शहर में ही यह सुख सुविधाएं उपलब्ध नहीं है, तो लोगों को सुविधाएं कैसे उपलब्ध होगी।

विशेष:–

- कवि ने आजाद भारत की कटु सत्य का वर्णन किया है।
- चिराग, मयस्सर आदि उर्दू शब्द के प्रयोग से भाव में गहनता आई है।
- खड़ी बोली में प्रभावित अभिव्यक्ति है।
- 'चिराग '-आशा व सुव्यवस्था के प्रतीक है।

© JCERT not to be republished

यहाँ दरखतों के साय में धूप लगती है,

चलो यहाँ से चल और उम्र भर के लिए।

शब्दार्थ–

दरख़्त = पेड़

साये = छाया

धूप = कष्ट

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 1 गजल संग्रह 'साए में धूप' से लिया गया है। इसके रचनाकार हिंदी ग़ज़ल सम्राट दुष्यंत कुमार हैं। कवि ने नेताओं के झूठे आश्वासन व संस्थाओं द्वारा आम आदमी के शोषण का वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि कहते हैं कि पेड़ों की छाया में भी हमें धूप लग रही है जबकि पेड़ों की छाया में हमें छावं मिलनी चाहिए। तात्पर्य यह है कि कवि ने उन संस्थाओं के बारे में बताया है, जो लोगों को सुख सुविधा उपलब्ध करवाने के नाम पर ही उनका शोषण कर जाते हैं। जिन राजनेताओं को हमने अपने लोक कल्याण सुरक्षा और विकास के लिए चुना था आज वही हमारा शोषण कर रहे हैं। भ्रष्टाचार में लिप्त रहने वाले लोगों से बचने के लिए कहते हैं। ऐसे समाज को छोड़कर हमें कहीं दूर चले जाना चाहिए जो आपको खुशियों वह सुख सुविधाएं नहीं दे सकता है।कवि भी इस समाज को छोड़कर कहीं दूर चले जाना चाहते हैं और फिर कभी लौट कर दोबारा यहां नहीं आना चाहते हैं। साथ ही समाज के अन्य लोगों से आह्वान करते हैं।

विशेष–

- कवि व्यवस्था पर नाराजगी जाहिर की है
- हिंदी और उर्दू की शब्दावली का प्रयोग है
- गजल शैली का प्रयोग है
- 'साए में धूप लगतीहै 'में विरोधाभास अलंकार है।
- खड़ी बोली में प्रभावी अभिव्यक्ति है।
- लक्ष्मण शक्ति का निर्वाह है
- अंतिम पंक्ति में निराशा व पलायन वाद की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

न हो कमीज़ तो पाँवों से पेट ढक लगे,

ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए।

शब्दार्थ–

मुनासिब = अनुकूल,उपयुक्त

सफर = रास्ता

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 1 गजल संग्रह साए में धूप से लिया गया है इसके रचनाकार हिंदी गजल के सम्राट दुष्यंत कुमार हैं। कवि राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है उसे खारिज करना और नए विकल्प की तलाश करना, का वर्णन है।

व्याख्या– कवि समाज के उन लोगों पर कटाक्ष करते हैं। जो हर परिस्थिति में जीने की आदी होते हैं। उनके आसपास क्या हो रहा है,इस बात से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता अभाव में भी आराम से जी लेते हैं।

© JCERT not to be republished

कवि कहते हैं कि अभाव में जीवन जीने के आदी लोग इन लोगों के पास अधिक पहनने को कमीज(कपड़े) नहीं होती तो, वह अपने पांव को मोड़ कर अपने पेट को ढक लेते हैं। मगर शासक वर्ग के खिलाफ आवाज तक नहीं उठाते हैं। ऐसे लोग ही शासकों के लिए उपयुक्त हैं। इनके कारण उनका राज शांति से चलता है क्योंकि वह उनका विरोध नहीं करते हैं या उस व्यवस्था के प्रति अपनी नाराजगी जाहिर नहीं करते हैं।

विशेष–

- कवि ने भारतीयों में विरोध भावना का न होना है।
- उर्दू मिश्रित खड़ी बोली का प्रयोग है।
- गजल शैली का प्रयोग है
- पांवो से पेट ढंकना नयी कल्पना है।

खुदा नहीं, न सही, आदमी का ख्वाब सही,

कोई हसीन नजारा तो हैं नजर के लिए।

शब्दार्थ–

खुदा = भगवान

ख्वाब = सपना

हसीन = सुंदर

नजारा = दृश्य

नजर = देखना

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 1 गजल संग्रह ‘साए में धूप ‘से लिया गया है। इसके रचनाकार हिंदी गजल के सम्राट दुष्यंत कुमार हैं। कवि राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करना और नए विकल्प की तलाश करना, का वर्णन है।

व्याख्या– कवि कहते हैं कि अगर लोग वर्तमान परिस्थितियों को बदल नहीं सकते हैं यह शासक वर्ग पर उनकी किसी बात का कोई असर नहीं होता है तो कोई बात नहीं कम से कम वो सुंदर सपने तो देख ही सकते हैं।

इन लोगों ने ईश्वर को कभी देखा नहीं, परंतु ईश्वर को मन ही मन भाप लेते हैं एवं ये अपनी कल्पना शक्ति का श्रेय भी ईश्वर को ही देते हैं कि ईश्वर के कारण ही ये अपनी जिंदगी के कुछ अधूरे सपनों को सपनों के माध्यम से ही देख लेते हैं और कल्पना में अपने अधूरे सपनों को पूरा भी करते हैं।

विशेष–

- कवि ने भारतीयों में विरोध भावना का न होना हैऔर खुदा को कल्पना माना है।
- उर्दू मिश्रित खड़ी बोली का प्रयोग है।
- गजल शैली का प्रयोग है

वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता,

मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए।

शब्दार्थ–

मतम इन = आश्वस्त

बेकरार = बेचैन

© JCERT not to be republished

आवाज = वाणी

असर = प्रभाव

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 1 गजल संग्रह 'साए में धूप 'से लिया गया है। इसके रचनाकार हिंदी गजल के सम्राट दुष्यंत कुमार हैं। कवि राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करना और नए विकल्प की तलाश करना, का वर्णन है।

व्याख्या– कवि कहते हैं कि गरीब व शोषित वर्ग को यह विश्वास हो गया है कि हम कुछ भी कर ले लेकिन इन परिस्थितियों को नहीं बदल सकते है परंतु कवि के अंदर इन परिस्थितियों को बदलने की बेचैनी है इसलिए वे कहते हैं की अगर हम सब मिलकर इस भ्रष्ट सिस्टम (व्यवस्था) के खिलाफ आवाज उठायेंगे और हमारे आवाज में दम होगा तो ये लोग परिस्थितियां अवश्य बदलेंगी अर्थात् आम आदमी को यह विश्वास हो गया है कि परिस्थितियां नहीं बदल सकती लेकिन कवि बेचैनी से इंतजार कर रहा है कि कब लोग एक साथ मिलकर शासन व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाएं और फिर देखिए कैसे बदलाव आएगा और यह व्यवस्था बदल जाएगा

कवि कहते हैं कि आम व्यक्ति अगर विरोध करने पर उतर जाए, क्रांति लाए, तो शायद उनकी जिंदगी बदल सकती है।

नकवि का यह व्यंग्य उन लोगों पर है जो मौन बैठे हैं कि परिस्थिति बदल ही नहीं सकती।

कवि ने आम व्यक्तियों के विचारों के विषय में बताया है कि आम व्यक्ति भ्रष्ट लोगों के विषय में यही सोचते एवं समझते हैं कि भ्रष्ट लोगों के मन में कोई सोच या उनके पास दिल नहीं होता, तभी तो वह लोगों का शोषण करते हैं एवं जिंदगी में खुश रहते हैं। फिर कवि कहते हैं कि आम व्यक्ति अगर विरोध करने पर उतर जाए, क्रांति लाए, तो शायद उनकी जिंदगी बदल सकती है।

विशेष–

- कवि सामाजिक क्रांति के लिए बेताब है
- पत्थर पिघल नहीं सकता से स्वेच्छाचारी शासकों की ताकत का पता चलता है।
- पत्थर पिघल में अनुप्रास अलंकार है।
- उर्दू शब्दावली युक्त खड़ी बोली का दो शैली का प्रयोग है

तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर की,

ये एहतियात जरूरी हैं इस बहर के लिए।

शब्दार्थ–

निजाम = शासक

सिला दे = बंद कर देना

जुबान = आवाज

शायर = कवि

एहतियात = सावधानी

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 1 गजल संग्रह 'साए में धूप 'से लिया गया है। इसके रचनाकार हिंदी गजल

not to be republished © JCERT

के सम्राट दुष्यंत कुमार हैं। कवि राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करना और नए विकल्प की तलाश करना, का वर्णन है।

व्याख्या- कवि कहते हैं जब भी कोई कवि या लेखक शासन की भ्रष्ट नीतियों के खिलाफ लोगों को जागरूक करने के लिए अपनी आवाज बुलंद करता है तो शासन वर्ग उस कवि की जुबान बंद करने की कोशिश करता है।

वे स्वयं को बचाने के लिए शायरों की जबान अर्थात् कविताओं पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। जैसे गजल के लिए बंधन की सावधानी जरूरी है,उसी प्रकार शासकों को भी अपनी सत्ता कायम रखने के लिए विरोध को दबाना जरूरी है। अर्थात् गजल के वक्त भी कई बातों को ध्यान रखना पड़ता है तब जाकर एक सुंदर व सधी हुई गजल बनती हैं। अर्थात् जब शायरी विरोध पर उतर जाती है, तब सत्ता के लोग इनकी आवाज बंद करने के लिए, इनकी लेखनी पर ही प्रतिबद्धता लगा देते हैं और अपने चेहरे को लोगों के सामने आने से रोक देते हैं।

विशेष–

- कवि कहते हैं सत्ताधारी लोग अपनी सत्ता बचाने के लिए शायर की जुबान बंद करने की बात गई है।
- उर्दू मिश्रित खड़ी बोली का प्रयोग है।
- गजल शैली का प्रयोग है

जिएँ तो अपने बग़ीचे में गुलमोहर के तले

मरें तो ग़ैर की गलियों में गुलमोहर के लिए

शब्दार्थ–

गुलमोहर = एक प्रकार का पेड़ का नाम

गैर = अन्य

गलियों = रास्ते

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 1 गजल संग्रह 'साए में धूप 'से ली गई है। इसके रचनाकार हिंदी गजल के सम्राट दुष्यंत कुमार हैं। कवि राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करना और नए विकल्प की तलाश करना, का वर्णन है।

व्याख्या– कवि कहते हैं कि जब तक हम अपने बगीचे में जिये हैं गुलमोहर के नीचे जी हैं और जब मृत्यु हो तो दूसरों की गलियों में गुलमोहर के लिए मरे अर्थात् गुलमोहर शब्द का प्रयोग स्वाभिमान या आत्मसम्मान के अर्थ में लिया गया है कवि कहना चाहते हैं कि इंसान को अपने घर में भी पूरे आत्म सम्मान व स्वाभिमान के साथ जीवन जीना चाहिए और अगर अपने घर के बाहर हमारी जान चली जाती है तो वह भी अपने सम्मान की रक्षा करते हुए जाए अर्थात् घर हो या बाहर व्यक्ति को सदा ही अपने स्वाभिमान और आत्मसम्मान के साथ जीना चाहिए।

विशेष–

- हिंदी और उर्दू की शब्दावली का प्रयोग है
- गजल शैली का प्रयोग हुआ है
- यहां पर 'गुलमोहर 'शब्द स्वाभिमान के लिए प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग हुआ है

© JCERT not to be republished

प्रश्न अभ्यास

1. आखिरी शेर में गुलमोहर की चर्चा हुई है। क्या उसका आशय एक खास तरह के फूलदार वृक्ष से है या उसमें कोई सांकेतिक अर्थ निहित है? समझाकर लिखें।

उत्तरः- गुलमोहर एक फूलदार पेड़ है परंतु कविता में गुलमोहर स्वाभिमान (आत्म सम्मान) के सांकेतिक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। कवि हमें गुलमोहर के द्वारा घर और बाहर दोनों स्थानों पर स्वाभिमान(आत्म सम्मान) से जीने की प्रेरणा प्रदान करता है।गुलमोहर एक ख़ास तरह का फूलदार वृक्ष है। इसके नीचे बैठकर लोगों को ख़ुशी का अनुभव होता है। कवि ने इसका सांकेतिक प्रयोग ऐसे भारत के लिए किया गया है जिसका सपना उन्होंने देखा है। वे ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जहाँ शांति और सुख की छाया हो। इसके लिए उन्हें कुछ भी त्याग और संघर्ष करना पड़े।

2. पहले शेर में चिराग शब्द एक बार बहुवचन में आया है और दूसरी बार एकवचन में। अर्थ एवं काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से इसका क्या महत्व है?

उत्तरः- पहले शेर में चिराग (शहर के खुशहाली) शब्द का बहुवचन 'चिरागाँ' (अन्य लोगों की खुशहाली) का प्रयोग हुआ है इसका अर्थ है अत्यधिक सुख-सुविधाओं से है। दूसरी बार यह एकवचन के रूप में प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ है सीमित सुख-सुविधाओं का मिलना। दोनों का ही अपना महत्त्व है। बहुवचन शब्द कल्पना को दर्शाता है वहीँ एकवचन शब्द जीवन की यथार्थता को दर्शाता है। इस प्रकार दोनों बार आया हुआ एक ही शब्द अपने-अपने संदर्भ में भिन्न-भिन्न प्रभाव रखता है।

पहली बार 'चिराग' शब्द का बहुवचन में प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ हर घर के खुशियों के लिए प्रयुक्त हुआ है। कवि ने वर्तमान समाज व्यवस्था पर व्यंग्य किया है जिसका उद्देश्य प्रत्येक के लिए सुख-सुविधाओं के साधन उपलब्ध कराना था।

दूसरी बार यह एकवचन में प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ यह है कि पूरे शहर या समाज के लिए एक भी सुख-सुविधा उपलब्ध नहीं है। जिस व्यवस्था में सभी के लिए खुशियों की आशा की गई थी, वहाँ पूरा समाज एक छोटे-से सुख के लिए तरस रहा है।

3. ग़ज़ल के तीसरे शेर को गौर से पढ़ें। यहाँ दुष्यंत का इशारा किस तरह के लोगों की ओर है?

उत्तरः- ग़ज़ल के तीसरे शेर से कवि दुष्यंत का इशारा समयानुसार अपने आप को ढाल लेने वालों से हैं। कवि कहते हैं कि ये ऐसे लोग हैं जिनकी आवश्यकताएँ बड़ी सीमित होती हैं और इसलिए ये अपना सफ़र आराम से काट लेते हैं।

ग़ज़ल के तीसरे शेर में कवि ने उन लोगों की तरफ इशारा किया है जो परिस्थिति के

© JCERT not to be republished

अनुसार स्वयं को ढाल लेते हैं। ऐसे लोग जो भाग्य पर निर्भर रहते हैं और जितना मिले उसी में संतुष्ट हो जाते हैं। इन लोगों की जीवन की आवश्यकताएँ सीमित हैं तथा कठिनाइयों को चुपचाप सह लेते हैं।

4. आशय स्पष्ट करें :

तेरा निज़ाम है सिल दे ज़ुबान शायर की,

ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए।

उत्तर:- इन पंक्तियों के जरिए शासक वर्ग पर व्यंग किया गया है। शासक वर्ग की सत्ता होने के कारण वे किसी भी शायर की जुबान पर पाबंदी अर्थात् अभिव्यक्ति पर पाबंदी लगा देते हैं। शासक को अपनी सत्ता कायम रखने के लिए इस प्रकार की सावधानी रखना जरुरी भी होता है परंतु ये सर्वथा अनुचित है। यदि बदलाव लाना है तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आवश्यक है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि यह कहना चाहते हैं कि कोई भी शासक शायर को अपने विरूद्ध आवाज बुलंद करने नहीं देता क्योंकि ऐसा होने से उस शासन व्यवस्था के लिए परेशानी खड़ी हो सकती है। यह किसी भी शासन-व्यवस्था के स्थायित्व के लिए आवशयक भी है। लेकिन जमाने में बदलाव के लिए शायरों को अपनी आवाज इस प्रकार से बुलंद करनी होगी जिससे कि उनकी आवाज जनता तक पहुँच सके।

5. दुष्यंत की इस ग़ज़ल का मिज़ाज बदलाव के पक्ष में है। इस कथन पर विचार करें।

उत्तर:- दुष्यंत की यह ग़ज़ल सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन की माँग करती है। तभी कवि मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए, यहाँ दरख्तों के साए में धूप लगती है आदि बातें कहता है कवि अपनी शर्तों पर जीना चाहता है और ये तभी संभव है जब परिस्थिति में बदलाव आए।

इस ग़ज़ल के माध्यम से कवि दुष्यंत राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहते हैं। कवि कहते हैं कि जिस उद्देश्य से इस व्यवस्था का निर्माण किया गया था वह पूरा नहीं हुआ। समाज के लोगों के लिए सुख-सुविधा तो उपलब्ध कराना दूर, किसी एक के लिए भी सुधार नहीं किया जा सका। कवि ऐसी ही शासन-व्यवस्था के विरूद्ध अपनी आवाज बुलंद करना चाहते हैं। वह शोषित वर्ग के लोगों के मन में क्रांति की ज्वाला सुलगाना चाहते हैं जिससे वे अपने अधिकारों तथा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर सकें।

6. हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन

दिल के खुश रखने को गालिब ये खयाल अच्छा है

दुष्यंत की ग़ज़ल का चौथा शेर पढ़ें और बताएँ कि गालिब के उपर्युक्त शेर से वह किस तरह जुड़ता है?

उत्तर:- दुष्यंत की ग़ज़ल का चौथा शेर —

खुदा न, न सही, आदमी का ख़्वाब सही,

कोई हसीन नजारा तो है नज़र के लिए।

ग़ालिब स्वर्ग की वास्तविकता से परिचित है परंतु दिल को खुश करने के लिए उसकी सुंदर कल्पना करना बुरा नहीं है।

© JCERT not to be republished

उसी प्रकार कवि दुष्यंत भी खुदा को मानव की कल्पना मानता है। परंतु दिल को खुश रखने के लिए खुदा की हसीन कल्पना करना कोई बुरी बात नहीं है।

दोनों शेरों के शायर काल्पनिक दुनिया में विचरण को बुरा नहीं समझते। दोनों के लिए खुदा और जन्नत के विचार ठीक हैं क्योंकि दोनों ही अनुभूति के विषय हैं

कवि दुष्यंत के ग़ज़ल के चौथे शेर में कवि दुष्यंत ने ईश्वर के अस्तित्व के कल्पना मात्र से व्यक्ति के आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करने की बात कही है। ईश्वर के होने का सुंदर सपना ही लोगों की आँखों को सुकून देता है। इस प्रकार शेर में कवि ने उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो वास्तविकता से दूर कल्पना मात्र से ही दिल को खुश कर लेते हैं।

गालिब के शेर में भी स्वर्ग की वास्तविकता से सभी परिचित हैं लेकिन दिल को खुश करने के लिए उसकी सुंदर कल्पना करते हैं। इस प्रकार दोनों शेरों में वास्तविकता को परे रखकर काल्पनिक दुनिया के बारे में वर्णन किया गया है।

7. 'यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है' यह वाक्य मुहावरे की तरह अलग-अलग परिस्थितियों में अर्थ दे सकता है मसलन, यह ऐसी अदालतों पर लागू होता है,जहाँ इंसाफ नहीं मिल पाता।

कुछ ऐसी परिस्थितियों की कल्पना करते हुए निम्नांकित अधूरे वाक्यों को पूरा करें।

क) यह ऐसे नाते-रिश्तों पर लागू होता है,...

ख) यह ऐसे विद्यालयों पर लागू होता है,...

ग) यह ऐसे अस्पतालों पर लागू होता है, ...

घ) यह ऐसी पुलिस व्यवस्था पर लागू होता है,...

उत्तर:- क) यह ऐसे नाते-रिश्तों पर लागू होता है जहाँ रिश्ते नाते प्रेम देने की बजाय दुःख देते हैं।

ख) यह ऐसे विद्यालयों पर लागू होता है जहाँ बच्चों को उचित ज्ञान नहीं मिलता।

ग) यह ऐसे अस्पतालों पर लागू होता है जहाँ उचित इलाज नहीं मिलता।

घ) यह ऐसी पुलिस व्यवस्था पर लागू होता है जहाँ नागरिक को सुरक्षा नहीं मिलती।

(क) यह ऐसे नाते-रिश्तों पर लागू होता है, जहाँ एक-दूसरे पर विश्वास और उसके प्रति प्रेम का भाव नहीं रहता।

(ख) यह ऐसे विद्यालयों पर लागू होता है, जहाँ छात्रों को पढ़ाया नहीं जाता।

(ग) यह ऐसे अस्पतालों पर लागू होता है, जहाँ रोगियों का ठीक से इलाज नहीं होता।

(घ) यह ऐसी पुलिस व्यवस्था पर लागू होता है, जहाँ जनता की सुनवाई नहीं होती तथा लोगों को सुरक्षा नहीं मिलती।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

© JCERT not to be republished